महिला विश्वविद्यालय एवं संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में योगदान का एक अध्ययन

बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं

शिक्षा शास्त्र पीएच.डी. उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका

JV'n. प्रो. (डॉ.) मंजू शर्मा

शोधार्थी

JV'n. गिरिजा शर्मा

फैकल्टी ऑफ एजूकेशन मैथोड़ोलोजी

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय

जयपुर(राजस्थान),भारत

2020

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषयवस्तु
1.	प्रस्तावना
2.	पृष्ठभूमि
3.	शोध का औचित्य का महत्व
4.	शोध समस्या कथन
5.	शोध अध्ययन के उद्देश्य
6	शोध में प्रयुक्त परिभाषित शब्दावली
7.	शोध विधि
8.	शोध में प्रयुक्त चर
9.	शोध का क्षेत्र
10.	शोध का परिसीमन
11.	संदर्भ ग्रन्थ सूची

शोध शीर्षक

महिला विश्वविद्यालय एवं संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में योगदान का एक अध्ययन

1.प्रस्तावनाः–

समाज के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण साधन शिक्षा ही है। शिक्षा से व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है। समाज के पूर्ण आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नारी शिक्षा बेहद ज़रुरी है। महिला एवं पुरुष दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। जिस प्रकार से साइकिल का संतुलन दोनों पहियों पर निर्भर होता है, उसी तरीके से समाज का विकास भी पुरुष एवं महिला के कन्धों पर आश्रित है। समाज को नई ऊँचाईयों तक ले जाने की क्षमता दोनों में होती है, इसलिए दोनों को ही बराबर की शिक्षा का अधिकार मिलना आवश्यक है। इन दोनों पहलुओं में से किसी एक की शिक्षा का स्तर निम्न होता है, तो समाज की प्रगति होना असंभव है। समाज की उन्नति के लिए पुरुषों के समान ही महिला का शिक्षित होना जरुरी है, क्योंकि बच्चों की पहली पाठशाला माँ होती है, जो उन्हे जीवन की अच्छाईयों और बुराईयों से अवगत करवाती है। अगर नारी शिक्षा को नज़र अंदाज किया गया तो देश के भविष्य के लिए यह किसी खतरे से कम नहीं होगा। एक अशिक्षित महिला में वो काबिलियत नहीं होती है। जिससे वह अपना, अपने परिवार व बच्चों का सही दिशा में मार्गदर्शन कर सके। एक शिक्षित महिला अपने परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी को अच्छे से निभा सकती है,

सामाजिक तथा आर्थिक कार्य करके समाज व देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकती है।

समाज को पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए वहाँ की महिलाओं का उत्थान व शिक्षित होना जरुरी है। यह एक तरह से दवाई की भांति है, जो मरीज़ को ठीक होने व सेहतमंद बनाने में मदद करती है। महिला शिक्षा एक बहुत बड़ा मुद्दा है, भारत को आर्थिक रूप से तथा सामाजिक रूप से विकसित बनाने में शिक्षित महिला उस तरह का औज़ार है, जो भारतीय समाज पर और अपने परिवार पर अपने हुनर तथा ज्ञान से सकारात्मक प्रभाव डालती है। संस्कृति और संस्कारयुक्त होती है, विज्ञान की प्रगति होती है तथा लौकिक ज्ञान चहुँमुखी होकर महिला का उत्तरोतर उत्थान हेतु प्रशस्त है। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश को प्राप्त कर सूरजमुखी का फूल खिल जाता है, उसी प्रकार से शिक्षा रूपी ज्ञान को अर्जित करके महिला का जीवन भी पुष्प के समान खिल जाता है। शिक्षा के अभाव में अज्ञानता रूपी अंधकार छाया रहता है। शिक्षा आत्मसातीकरण को प्रज्ज्वलित करता है।

''बाधाएँ कब बाँध सकी हैं, आगे बढ़ने वालो को ।
विपदाएँ कब रोक सकी हैं, पथ पर चलने वालों कों।।''

2. पृष्ठभूमि :– जोन इलियट ने पहला महिला विश्वविद्यालय खोला था। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा सन् 1854 में स्त्री शिक्षा को स्वीकार किया गया था। भारत में महिलाओं को शिक्षा देने वाला पहला महिला विश्वविद्यालय कोलकता विश्वविद्यालय था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सन् 1947 से लेकर भारत सरकार पाठशाला में अधिक से अधिक बालिकाओं व महिलाओं शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर करने के लिए अनेक योजनाएँ बनाई हैं।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद सन् 1947 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग को बनाया गया, आयोग ने सिफारिश किया कि महिलाओं कि शिक्षा में गुणवता में सुधार किया जाए, और महिलाओं को साक्षर करने के लिए महिला साक्षर भारत मिशन की शुरूआत किया गया था। इस मिशन में महिलाओं की शिक्षा में बुनियादी शिक्षा, पोषण और परिवार नियोजन की शिक्षा को प्रदान किया गया था। यह कदम महिलाओं की स्थिति को समाज में सुधारने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। कुछ परिवारों में काम कर रहे मुखिया पुरुष के साथ दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटनाओं का साया आ जाए, तब उस घर की स्थिति में पूरे परिवार का बोझ महिलाओं पर आ जाता है। महिलाओं को अपने परिवार की जरुरतों को पूरा करने के लिए शिक्षित होना जरुरी है। इस से वह विभ्भिन्न क्षेत्रों में प्रवेश (जैसे महिलाएँ शिक्षिका, डॉक्टर, वकील ,प्रशासनिक व अन्य कार्यक्षेत्रों) कर कार्य सकती है। महिलाओं के शिक्षित होने से दहेज समस्या, बेरोजगारी की समस्या व सामाजिक अशांति आदि बुराइयों से स्वयं व परिवार वालों को बचा सकती है। इस सोच को मध्य नज़र रखकर महिला विश्वविद्यालय एवं संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में अपने विचारों के माध्यम से बदलाव लाने की एक कोशिश की ओर जो सपना महिला शिक्षा के क्षेत्र में उन्होने देखा उसे साकार करने के लिए जीवनपर्यन्त प्रयास करते रहे।

संस्कृत में यह उक्तियाँ प्रसिद्ध है– (1) 'नास्ति विद्यासमं चहुर्नास्ति मातृ समोगुरुः'

इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में विद्या के समान नेत्र नहीं है और माता के समान गुरु नहीं है। माता के द्वारा दिया गया यह ज्ञान बालक के लिए पत्थर पर बनी अमिट लकीर के समान होता है,जो सारे जीवन स्थायी

होता है। महिलाओं की शिक्षा पुरुषों से सौ गुना ज्यादा उपयोगी होती है, क्योंकि एक पुरुष एक परिवार को शिक्षित करता है, लेकिन एक महिला पूरे समाज को शिक्षित करती है।

(2) 'ज्ञानं मनुजस्य तृतीय नेत्रम्'

ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है, जो मनुष्य के समस्त तत्वों के मूल को समझने की क्षमता रखता है।

(3) ''विद्यानामी नरस्य रूपमधिकं गुप्तं धनं

विद्याा भेगकारी यशः सुखकारी, विद्या गुरुणांगुरु।''

अर्थात– विद्या मनुष्य का सुन्दर रूप है,अत्यन्त गुप्त धन है, सुखोपभोग देने वाली है, विद्याा गुरुओं की गुरु है। शिक्षा उदात्त गुणों से मंडित है, अच्छे इंसान का निर्माण करती है। शिक्षा के बिना जीवन दिशाहीन है।

2.1 शिक्षा के बारे में विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों के विचारः–

1. भारतीय शिक्षा शास्त्रियों के विचार–

(1) शंकराचार्य के अनुसार, ''शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए।''

(2) स्वामी दयानन्द के अनुसार, ''शिक्षा मानव जीवन के चतुर्मुखी विकास, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास का आधार स्तम्भ है जो मनुष्य के अज्ञानरूपी अंधकार को नष्ट कर उसे यथार्थ का ज्ञान कराती है।''

(3) चार्वाक के अनुसार, ''शिक्षा वह है जो मनुष्य को सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने योग्य बनाती है।''

(4) जे. कृष्णामूर्ति के अनुसार, ''शिक्षा सच्चे अर्थों में व्यक्ति को परिपक्व तथा स्वतंत्र होने एवं प्रेम तथा अच्छाई का विकास करने में सहायता करती है।''

(5) डॉ. राधा कृष्णन के अनुसार, ''शिक्षा जिज्ञासु मस्तिष्क, अन्तर्ज्ञानी हृदय, चेतनशील आत्मा तथा छानबीन करने वाले विवेक का विकास करती है।''

(6) कोठारी आयोग (1964–66) के अनुसार, ''शिक्षा सत्य के मार्ग का अनुसरण तथा सद्गुणों का प्रशिक्षण है, शिक्षा बालक का द्वितीय जन्म है, शिक्षा मुक्ति प्रदान करती है।''

2. पाश्चात्य विचारकों के विचार –

(1) अरस्तु के अनुसार :–''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।''

(2) रूसो के अनुसार –''सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के अंदर से प्रस्फुटित होती है यह उसकी अपनी अंतर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति है।''

(3) प्लेटो के अनुसार –''शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर एवं आत्मा को पूर्णता प्रदान करना है जिसके योग्य बनाना है।''

(4) सुकारत के अनुसार–''शिक्षा का तात्पर्य संसार के उन सर्वमान्य विचारों को प्रकट करने से जो व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क में निहित है।''

(5) फ्रोबेल के अनुसार–शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की अंतः शक्तियों को बाहर लाया जाता है।

(6) पेस्टोलोजी के अनुसार–''मानव शक्तियों का प्राकृतिक निरंतर तथा प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है।''

2.2 संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग का जीवन परिचयः– डॉ0 पंकज गर्ग का जन्म महाजन (वैश्य) धनाढ्य परिवार में 22 जुलाई 1973 (आषाढ़ मास की अष्टमी) को तहसील खुर्जा जिला बुलन्दशहर उत्तरप्रदेश राज्य में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री महेश चन्द गुप्ता राजकीय सेवा से सेवानिवृत है व इनकी माताजी का नाम श्रीमती मिथलेश गर्ग है। इनके दो भाई और एक बहन है। बड़े भाई का नाम संजय गर्ग, छोटे भाई का नाम जलज व बहन का नाम समीक्षा है। बहन–भाईयों में दूसरे नम्बर के थे, लेकिन जीवन में अपनी काबलियत, कुछ विशेष करने की योग्यता, कर्मशीलता के कारण श्रेष्ठ रहे और अपने माता–पिता का नाम रोशन किया। इनके पिता जी राजकीय सेवा में होने के कारण इनका तबादला एक स्थान से दूसरे स्थान पर होता रहता था। इस कारण इनकी प्रारम्भिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंन्दिर जिला–एटा व अतरौली तहसील जिला अलीगढ़ में हुई, इन्टर ,हाई स्कूल परीक्षा व बी.एससी. तक की शिक्षा आर.बी.एस कॉलेज खंडारी रोड आगरा उत्तरप्रदेश में बी.एच.एम.एस की शिक्षा 2002 में भारतीय होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल बी–नारायण गेट भरतपुर राजस्थान से प्राप्त की थी जो राजस्थान विश्वविद्यालय से संबद्ध है। पढ़ाई पूर्ण करने के बाद इनका विवाह श्रीमती विदुषी गर्ग के साथ हुआ, तथा इनसे इनके दो पुत्र है बड़े पुत्र का नाम वेदान्त गर्ग व छोटे पुत्र सुर्यांश गर्ग है।

डॉ0 पंकज गर्ग बचपन से ही चंचल व होनहार थे। माँ से इनका गहरा लगाव था, अपने व्यस्त जीवन में से भी समय निकालकर के हर पल के खट्टे व मीठे पलों का जिक्र अपनी माँ को एक मित्र की तरह बताते थे। बालिकाओं व महिलाओं के प्रति आदर भाव उनमें बचपन से ही था। चाहे वह अध्यापिका, स्वयं की माँ, बहन हो या समाज में कोई भी महिला

हो सबका आदर करते थे। जब कभी किसी बालिका या महिला पर अत्याचार व अमानवीय व्यवहार होते देखते थे तो तुरन्त मदद के लिए आगे आते थे फिर चाहे उन्हे कितनी भी परेशानी क्यों ना उठानी पड़े वे हमेशा मदद के लिये तत्पर रहते थे। इनमें यह नेतृत्व करने की क्षमता स्कूल के समय से थी। इस दौरान इन्होने छात्र संघ का चुनाव लड़ा और विजयी हुये। उनके उक्त कार्यो में उनके अध्यापकगण और मित्रगण हमेशा ही सहयोगी रहे। उनकी इस सहयोग व नेतृत्व की भावना से उनकी माता जी को बहुत प्रसन्नता होती थी ।

डॉ. पंकज गर्ग को शिक्षा के क्षेत्र में अपने आपको स्थापित करने की प्ररेणा जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय उदयपुर में जब वे परीक्षा नियंत्रक पद पर कार्यरत थे इस दौरान ही उन्होने अपना मन बना लिया था कि वे भी अगर अवसर मिला तो एक महिला विश्वविद्यालय की ही स्थापना करेगें और इस दौरान उन्होने इस क्षेत्र की बारिकियों का भी अध्ययन कर लिया था जैसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व अन्य सवैंधाानिक निकायों के नियमों व उनके कार्यप्रणाली का गहन अध्ययन किया जो आगे चलकर उनके जीवन में काम आया और जब राजस्थान सरकार के द्वारा निजी विश्वविद्यालय अधिनियम राज्य में लाया गया जिसके माध्यम से यह स्वर्णिम अवसर उनको मिला। इस अवसर का लाभ उनको मिला और उन्होने राजस्थान जयपुर में प्रथम निजी महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी, और महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किया। बहुत से सपने अभी अधूरे ही रह गये क्योंकि उनका वैश्विक महामारी कोरोना के कारण विगत 6 जून 2021 को असामयिक निधन हो गया। एक दिव्य ज्योति परमात्मा में विलीन हो गई।

2.3 संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग का शैक्षिक विचारः– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग ने महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी उनका मानना था कि आज महिला वह सभी कार्य कर सकती है, जो पुरूष कर सकते है। उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय की चैयरपर्सन से लेकर नीचे की पंक्ति के सभी अधिकारी, सुरक्षा प्रहरी तक महिला ही है और उन्होंने इन महिला अधिकारियों के सहयोग से ही अपने जीवन में लगभग 14 वर्ष तक विश्वविद्यालय संचालित किया। उनके शिक्षा सम्बन्धित विचार थे कि समाज में जो महिलाओं की स्थिति है उसमें सुधार के लिए उनका शिक्षित होना तथा साथ –साथ कार्यक्षेत्र में भी अग्रसर करना ताकि महिला समाज में अपना स्थान पुरुषों के समान प्राप्त कर सके। समाज की सोच में बदलाव ला सके व कठिन परिस्थितियों में अपना व परिवार का साथ दे सके। हर क्षेत्र में महिलाओं का भी प्रभुत्व हो वह भी अपनी पहचान बना सके। उनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नवीन समाज का निर्माण कर सके। इस सोच को आगे बढाने के लिए उन्होने पहले छोटे स्तर पर सोचा और उसे प्रगति देने के लिए (2003 में ज्योति विद्या शिक्षा समिति) का पंजीकृत करवाया। तथा बाद में उन्होने महिला उत्थान व शिक्षा का दायरा बड़ी सोच के साथ ही पूरा हो सकता है, तब इस सोच को पूरा करने के लिए उन्होने 14 नवम्बर 2003 को एक ट्रस्ट बनाया गया जिसका नाम –ज्योति विद्यापीठ ट्रस्ट रखा और इसके माध्यम से अपने सपनों को प्रारूप प्रदान किया। 2008 में उन्होने ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की और महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किया।

शिक्षा का अर्थ– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के अनुसार ''शिक्षा के माध्यम से ही महिलाओं को समाज में उनका क्या स्थान व पहचान है का सही अर्थ

समझाया जा सकता है और समाज व परिवार में उचित स्थान दिलाया जा सकता है। वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का एक स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षैत्रों में महिलाओं को अपना स्थान प्राप्त करने में सच्चा पथ प्रदर्शक का कार्य करती है''

3.शोध का औचित्य का महत्व :– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में अपने विचारों के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। उनके विचार नारी शिक्षा के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान समाज के परिप्रेक्ष्य में कितनी उपादेयता हैं यह अध्ययन करना औचित्य पूर्ण प्रतीत होता है। स्त्रियों की भूमिकाएँ बदलती हैं, बनती हैं और युग परिभाषित होती हैं भारत में स्त्रियों की दशा सदैव एकसी नहीं रही अपितु समय एवं कालानुसार उसमें परिवर्तन आते गये। किसी युग में उसे सम्मान दिया गया तो कभी उत्पीड़न, अत्याचार एवं जुल्म के हदें पार कर दी गईं महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु समय–समय पर अनेक प्रयास होते रहे हैं। अनेक समाज सुधारकों ने महती भूमिका निभाई जिनमें प्रमुख थे राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती, गोविन्द रानाडे, बाल गंगाधर तिलक, केशव कर्वे, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी आदि। महिला समाज सुधारकों में पं. रमाबाई स्वर्ण कुमारी देवी, रानी स्वर्णमयी, सावित्री बाई फुले, आनन्दबाई जोशी आदि स्त्रियों ने समाज में शोचनीय स्थिति का प्रमुख कारण अज्ञानता, अंधविश्वास व अशिक्षा बताया। शिक्षा द्वारा ही नारी सबलीकरण को ठोस आधार मिल सकता है यह बात सभी को स्पष्ट हो गई। भारतीय नारी को ऊँचा उठाने के जितने प्रयास भारत में किए गए दुनिया का कोई देश उसकी समकक्षता नहीं कर सकता। समाजसुधारकों की कड़ी में संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग

द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। उनके द्वारा राजस्थान राज्य के जयपुर जिले प्रथम निजी विश्वविद्यालय संचालित किया और महिला शिक्षा हेतु सशक्त प्रयास किए गए और उसमें उनको सफलता प्राप्त हुई। उनका दृढ़ मत था कि शिक्षा द्वारा ही स्त्रियाँ यह जान सकेगी कि उनकी समाज में शोचनीय स्थिति क्यों है? शिक्षा द्वारा ही वे समाज में सशक्त, सम्मानीय एवं महत्वपूर्ण भूमिका दर्ज करा सकती हैं। समाज के उत्थान एवं राष्ट्र के निर्माण में नारी की अहम भूमिका होती है। 'नारी ही वह धुरी है जिसके चारों ओर विश्व घूमता है। नारी स्थिति सुधार हेतु अनेक विद्वतजनों, समाज सुधारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उन सब समाज सुधारकों में एक नाम और दर्ज हो गया। ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग का जो एक प्रमुख शिक्षाविद्ध के साथ–साथ समाज सुधारक भी रहे उनको भी इस कड़ी में सभी के द्वारा याद किया जाता रहेगा जिन्होने उत्तरप्रदेश में जन्म लिया लेकिन उन्होने राजस्थान के जयपुर जिले के झरना गाँव को उन्होने अपनी कर्मस्थली बनाया और महिलाओं में शिक्षा की अलख जगाई और इसमें वे सफल भी रहे।

परन्तु संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में योगदान द्वारा किए गए प्रयासों पर शोध अध्ययन अति न्यून दृष्टिगत हुए जिन्होंने नारी उत्थान हेतु आंदोलन का नेतृत्व किया। अतः शोधकर्त्ता के मानस में कतिपय प्रश्न उभरे जिनके आधार पर उनके प्रयासों को व्यक्त किया जा सके–

1. क्या शिक्षकों को संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के जीवन सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी है?
2. संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के शैक्षिक विचार क्या थे ?

3. संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के नारी शिक्षा के प्रति विचार क्या थे?

4. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षको ं के नारी शिक्षा के प्रति अभिमत क्या है?

5. क्या संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग की शिक्षा के प्रति विचारधारा महिला उत्थान व शिक्षा में योगदान में उपयोगी है?

इन्हीं प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधकर्त्ता ने निम्नांकित विषय शोध अध्ययन हेतु चयनित किया।

4. शोध समस्या कथनः–

महिला विश्वविद्यालय एवं संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में योगदान का एक अध्ययन

4.1 प्रासंगिकता

.शोध अध्ययन के उद्देश्यः– शोध अध्ययन के कार्य का उद्देश्य निश्चित होता है उद्देश्य के बिना कार्य हो या अनुसंधान दोनों ही दिशाहीन होते है।

वी.डी. भाटिया के शब्दों के अनुसार– उद्देश्य के अभाव में बालक उस नाविक के समान होता है, जो अपनी मंजिल नहीं जानता है और वह पतवार विहीन नौका कि तरह लहरो के थपेड़े खाकर किसी मीनार पर जा लगेगा। किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित किये गये उद्देश्यों पर बहुत निर्भर करती है उद्देश्यों की स्पष्टता अंनुसंधान को सरल एवं सफल बना देती है।

उद्देश्य किसी कार्य का अंतिम बिन्दु है जहाँ तक पहुँचने का सतत प्रयास किया जाता है। उद्देश्य विहीन कार्य उस रेत के समान होती है जो

समय के साथ–साथ धूमिल हो जाती है जीवन का प्रत्येक क्षण किसी न किसी उद्देश्य से संलग्न है।

इसी संदर्भ में यदि शोध कार्य की बात करें तो प्रत्येक शोध कार्य किसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु किया जाता है। सही, उपयुक्त, उद्देश्य तथा अनुसंधान कार्य को उचित दिशा प्रदान कर सकते है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने अग्रलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया है।

(1) मुख्य उद्देश्यः– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में योगदान का अध्ययन करना।

(2) सहायक उद्देश्यः–संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग द्वारा महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना

(1) शिक्षा के उद्देश्य– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के विचार में शिक्षा द्वारा महिला के जीवन में शिक्षा का सही अर्थ समझाया जा सकता है। उससे महिला को नई पहचान मिल सकती है।

(2) शिक्षा का पाठ्यक्रम– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग का मानना था कि शिक्षा का मूल उद्देश्य एक सन्तुलित मानव का विकास करना है। शिक्षा का पाठ्यक्रम क्रिया प्रदान हो जिससे समझ को विकसित करे।

(3) शिक्षण की विधियाँ– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग ने शिक्षण की विधियों में अत्यधिक बल क्रिया विधि पर दिया,शिक्षा एवं प्रकृति में सहसम्बन्ध स्थापित कर शिक्षण करवाया जाना चाहिए। जिसके माध्यम से समझ व अनुभव दोनों का विकास होता है।

(4) छात्र–शिक्षण का सम्बन्ध– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के अनुसार छात्र–शिक्षण का सम्बन्ध इस प्रकार से हो कि छात्र अपनी समझ को विकसित करे या विषय वस्तु की समझ प्रदर्शित करें और उस समझ को

अपने जीवन में उपयोग कर सकें। छात्र–शिक्षण एक पूर्वकालिक,पर्यवेक्षित व अनुदेशात्मक अनुभव है।

(5) अनुशासन की संकल्पना– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के अनुसार अनुशासन परम्परागत सिद्धान्तों पर आधारित नहीं होना चाहिए। उनका मत महिलाओं को पूर्ण (आन्तरिक व बाह्य) स्वतंत्रता देने के पक्ष में था।

5. शोध का उद्देश्य–इस शोध का उद्देश्य संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के महिला शिक्षा एवं उत्थान से सम्बन्धित विचारों को जानना और यह सिद्ध करना कि उनका महिला संबन्धित विचारों को स्थापित करना व उनके सपने, इच्छाओं एवं आकांक्षाओं पर खरा उतरे इस शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य :–

1. संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग का महिला शिक्षा में योगदान का अध्ययन से सम्बन्धित विचारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के महिला उत्थान सम्बन्धित विचार एवं स्थिति से परिचित हो सकेंगे ।
3. संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के महिला उत्थान व शिक्षा में योगदान से सम्बन्धित विचारों का अध्ययन करना।

6. शोध में प्रयुक्त परिभाषीकरण– किसी भी अनुंसधान को सफलतापूर्वक करने के लिए आवश्यक है कि समस्या की प्रकृति के अनुरूप विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले कार्य में संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के द्वारा महिला उत्थान व शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। जिस में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, रोजगार अनुशासन शिक्षण विधियाँ ये सभी दर्शन द्वारा निर्धारित होते है।

7. शोध विधिः—समस्या का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने एवं उसे पूर्ण रूप प्रदान करने हेतु यह अनिवार्य है कि समस्या के अनुरूप ही विधि का चयन किया जाये। अतः शोधकर्त्री ने अपनी समस्या के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन हेतु ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि के अन्तर्गत उपर्युक्त शिक्षाविद से संबंधित दार्शनिक विचार एवं अन्य शैक्षिक विचारों की खोज करने के लिये अनुसंधानकर्ता को दार्शनिक विधि का भी सहारा लेना होता है। किसी शिक्षाशास्त्री के दार्शनिक एवं शैक्षिक योगदान को जानने के लिए अतीत में देखना होता है, यहां पर काल्पनिक तथ्यों का अध्ययन नहीं लिया जा सकता। अतीत में प्रवेश करना बहुत सरल नहीं होता। व्यक्ति स्वयं अतीत में नहीं जा सकता। इसके लिये उक्त समय जो विद्यमान में उन्होंने जो घटनायें देखी उनके द्वारा जो कार्य किये गये। लेखों पत्रों आदि पर शोधकर्त्री को निर्भर रहना होता है। ये प्रमाण या आधार ही अध्ययन स्त्रोत कहलाते है।

प्रस्तुत शोध महिला उत्थान व शैक्षिक योगदान के अध्ययन पर आधारित होने के कारण उनका व्यक्त्वि, ग्रंथालय ,पत्र पत्रिकाओं व संबंधित व्यक्तियों को प्रमुख स्त्रोत माना गया है।

8. शोध में प्रयुक्त चरः—अमूर्त अवधारणाओं से सामाजिक अनुसंधान के व्यावहारिक पक्ष की और अग्रसर होने के लिये हमें कुछ पदावलियों को खोजना है ऐसी ही एक पदावली है 'चर'। यह एक ऐसी विशेषता है जिसमें दो या दो से अधिक मूल्य निहित होते है यह एक ऐसी वस्तु है जो परिवर्तित होती रहती है यह एक ऐसी विशेषता है जो अनेक व्यक्तियों समूहों, घटनाओं, वस्तुओं आदि में सामान्य होती है।

करलिंगर के अनुसार– ''चर वह गुण है जिसके अनेक मूल्य हो सकते है।''

पोस्टमेन तथा ईगन– ''परिवर्ती अवस्था चर वह लक्षण या गुण है जिसके अनेक प्रकार के मूल्य हो सकते है।''

(1)संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के द्वारा महिला उत्थान व शैक्षिक विचाधारा–स्वतंत्र चर

(2) महिला उत्थान व शिक्षा क्षेत्र में योगदान– आश्रित चर

9. शोध क्षेत्रः–शोधकर्त्री ने अपने द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य के आधार पर सीमित किया है। जिसमें शोधकर्त्री द्वारा महिला विश्वविद्यालय एवं संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के महिला उत्थान व शिक्षा में योगदान के अध्ययन के लिए उनकी शैक्षिक तत्वों का संकलन तथा उनके व्यक्तित्व–कृतित्व सृजन कृतियों ,पत्र–पत्रिकाओं आदि तक अपने शोध कार्य को परिसीमन किया है।

9.1 तार्किक विश्लेषण–शोधकर्त्री द्वारा किये जाने वाले शोध में विषयवस्तु का तार्किक विश्लेषण किया गया है क्योंकि विषयवस्तु के तार्किक विश्लेषण के पश्चात् संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के द्वारा महिला उत्थान व शैक्षिक विचाधारा उपादेयता एवं योगदान के बारे में ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

9.2 शोध प्रारूप –जहोडा के अनुसार, तथ्यों के विश्लेषण के लिए शोध प्रारूप एक प्रकार का संगठन हैं एक शोधकर्त्ता को इस बात पर विचार करना पड़ता है कि तथ्यों का एकत्रीकरण तथा परिकल्पनाओं को सिद्ध करने हेतु क्या प्रक्रिया अपनायी जाए, शोध कार्य को सही दिशा प्रदान करने हेतु शोधार्थी को एक रूपरेखा तैयार करनी पड़ती है। अध्ययन विषय की प्रकृति, स्वरूप एवं उद्देश्यों के अनुसार शोध प्रारूप का निर्माण आवश्यक

होता है। शोधार्थी को शोध करने हेतु समस्या का चयन कर सबसे मुख्य कार्य शोध प्रारूप का निर्माण करना होता है। शोध प्रारूप की सहायता से शक्ति, धन तथा समय का अपव्यय नहीं होता साथ ही शोधार्थी अधिक आत्मविश्वास के साथ अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है। चूँकि शोध अनेक प्रकार के होते हैं, अतः अध्ययनकर्त्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त किसी एक शोध प्रारूप का चुनाव करता है। शोध प्रारूप का चुनाव शोध अध्ययन की प्रकृति एवं उसके उद्देश्यों पर निर्भर करता है।

प्रथम चरण– में शोधकर्त्री ने विभिन्न स्थलों संबंधित व्यक्तियों से शोध से संबंधित साहित्य का संकलन किया।

द्वितीय चरण–में साहित्य कृतित्व, लेख, पुस्तके व व्यक्तित्व जीवनी आदि जो अन्य विद्वानों द्वारा लिखि गयी है में से विषयवस्तु विश्लेषण पर उद्‌देश्यानुसार विचारों का संकलन किया।

तृतीय चरण–में शैक्षिक विचारों के रूप में नवीन तथ्य खोजकर उनका विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ चरण–में विश्लेषित किये गये शैक्षिक विचारों कि उद्‌देश्यानुसार व्याख्या करके निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

पंचम चरण– में प्राप्त शोध निष्कर्षो के आधार पर पुर्वानुमान की जाँच की गई है।

10. शोध की परिसीमाएँ– किसी भी शोध प्रक्रिया में साधन, शक्ति और समय सीमित होने के कारण समस्या के सभी पक्षों का गहन अध्ययन करना कठिन होता है, इसलिए संबन्धित विषयवस्तु का परिसीमन करना आवश्यक हो जाता है। परिसीमन का मतलब शोध समस्या को सीमाओं में रखकर देखने से है।

10.1 समस्या की परिसीमाएँ–शिक्षा में बहुत से पक्ष होते है,लेकिन हम पाँच पक्षों पर ही विचार करेंगे।

(1) शिक्षा के उद्देश्य

(2) शिक्षा का पाठ्यक्रम

(3) शिक्षण की विधियाँ

(4)छात्र–शिक्षण का सम्बन्ध

(5)अनुशासन की संकल्पना

10.2 प्रस्तावित शोध अध्यायों का वर्गीकरण

किसी भी कार्य को व्यवस्थित रुप से सम्पन्न करने के लिए उसकी एक पूर्व निर्धारित व सुनियोजित योजना बना लेना अति आवश्यक है। क्रमबद्धपूर्ण एवं निश्चित कार्यप्रणाली ही कार्य को सफलता प्रदान करती है। प्रस्तुत शोधकार्य को व्यवस्थित रुप से लिपिबद्ध करने के लिए शोध प्रबंध को पाँच अध्याय में वर्गीकृत किया गया है।

प्रथम अध्याय– शोध का प्रस्तुतीकरण

द्वितीय अध्याय–सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

तृतीय अध्याय– संस्थापक डॉ0 पंकज गर्ग के द्वारा महिला उत्थान व शैक्षिक विचारधाराओं का अध्ययन

चतुर्थ अध्याय–विषयवस्तु विश्लेषण

पंचम अध्याय– निष्कर्ष व सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- बावेल, अगस्ट (1976), 'वीमैन इन दी पॉस्ट, प्रजैंट एण्ड फ्यूचर', नई दिल्ली, नेशनल बुक सेंटर।
- भण्डारी, सुनन्दा, 'महिला सशक्तिकरण एवं योजनाएँ', जयपुर, रितु प्रकाशन।
- भाग्य, गोपाल (2001), 'ह्यूमन राइट्स, कन्सर्न ऑफ दि फ्यूचर', नई दिल्ली, कल्याण प्रकाशन।
- बनर्जी, श्रुति (2005), 'रोल ऑफ वीमैन इन डवलपमैंट सेंटर', इलाहाबाद पब्लिक, डिस्ट्रीब्यूटर।
- भाटी, कांता (2002), 'महिला उत्पीड़न, एक समाजशास्त्रीय अध्ययन', जयपुर,
  राजस्थान विश्वविद्यालय।
- बी.बी., फातिमा (1998), 'महिलाएँ एवं कानून', आगरा, विकास प्रकाशन।
- बोहरा, आशारानी (1994), 'नारी शोषण, आइने और आयाम', नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- बोहरा, आशारानी (2005), 'औरत कल और आज', आगरा, कल्याणी शिक्षा परिषद।
- भगवती, स्वामी एवं किशोर, सविता (2008), 'महिला सशक्तिकरण : क्यों और कैसे?, जयपुर, आ. बी. एस. ए. प्रकाशन।
- चक्रवर्ती, हरिद्वार (2007), 'भारतीय समाज में नारी शिक्षा का महत्व', मेरठ, विद्या प्रकाशन।

- चौधरी, प्रतिभा (1998), 'चेंजिंग वैल्यूज अमंग यंग वीमैन', नई दिल्ली, अमर प्रकाशन।
- दीपाली (2009), 'वीमैन राइट्स इन इंडिया', प्रामिसेज एंड प्रोस्पैक्ट्स, प्रिंटस हॉल इंडिया, प्रा. लि.।
- द्विवेदी, राकेश (2005), 'महिला सशक्तिकरण : चुनौतियाँ एवं राजनीतियाँ', भोपाल, पूर्वाशा प्रकाशन।
- दिनेश, नंदिनी डालमिया (2003), 'नए आयामों को तलाशती नारी', नई दिल्ली, नवचेतन प्रकाशन।
- जैन, प्रतिमा एवं शर्मा, संगीता (1998), 'भारतीय स्त्री : सांस्कृतिक संदर्भ', जयपुर, रावत प्रकाशन।
- कटारिया, कमलेश (2003), 'नारी जीवन, वैदिक काल से आज तक', जयपुर, यूनिक प्रकाशन।
- लवानियाँ, एम. एम. (1989), 'भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र',नई दिल्ली रिसर्च प्रकाशन।
- महावर, सुनील (2011), 'राज्य एवं महिला अधिकार', जयपुर प्वाइंटर प्रकाशन।
- माहेश्वरी, सरला (1998), 'नारी प्रश्न', नई दिल्ली, राधाकृष्णन प्रकाशन।
- मल्होत्रा, मीनाक्षी (2004), 'एम्पावरमैंट ऑफ वीमैन', वाल्यूम–3, नई दिल्ली, एशिया बुक हाउस।
- मनियार, मृदुला (2004), 'वीमैन क्रिमीनल एण्ड लाइफ स्टाइल' नई दिल्ली, कावेरी बुक हाउस।